दैनिक भास्कर

किशनगढ़ 02-04-2025

अभ्यास से बन सकते हैं बेहतर संचारक : प्रो.सुहास जोशी

भास्कर न्यूज | बांदरसिंदरी

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय में 1 अप्रैल 2025 को 'एकेडमिक लीडरशिप एंगेजमेंट लेक्चर सीरीज' के तहत विशिष्ट व्याख्यान हुआ। कुलपति प्रो. आनंद भालेराव के नेतृत्व में हुए इस कार्यक्रम में आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी मुख्य वक्ता रहे। उन्होंने "प्रभावी संचार के लिए रणनीतियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रो. जोशी ने कहा कि जो अच्छा संचारक है, वह स्वाभाविक रूप से शीर्ष 5% में आता है। जो नहीं है, वह अभ्यास से बन सकता है। उन्होंने कहा कि संचार का उद्देश्य श्रोता से संवाद स्थापित करना होता है। उन्होंने स्पष्टता और संक्षिप्तता को जरूरी बताया। कहा कि तकनीकी शब्दों से बचें। सरल और सटीक भाषा में बात करें। श्रोता की जरूरत और नजरिए को समझें। विचारों को लिखने से पहले व्यवस्थित करें। इससे बात स्पष्ट और तार्किक बनती है।

उन्होंने बताया कि सकारात्मक दृष्टिकोण और सम्मान के साथ प्रतिक्रिया देना जरूरी है। चार्ट, तालिकाएं और दस्तावेज संवाद को असरदार बनाते हैं। व्याख्यान का सबसे रोचक भाग सार-संक्षेप लिखने की प्रक्रिया पर चर्चा रही। उन्होंने बताया कि

शोध के नए तत्वों को संक्षेप में रखना जरूरी है। इससे पाठक की रुचि बनी रहती है।

प्रो. जोशी ने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के एक अध्ययन का उदाहरण दिया। इसमें तिलचट्टों के व्यवहार का अध्ययन किया गया। वे संकरे रास्तों से शरीर को संकुचित कर निकल जाते हैं। इसी से प्रेरित होकर वहां के इंजीनियरों ने एक सॉफ्ट रोबोट बनाया। यह जटिल जगहों में आसानी से चल सकता है। यह लचीले पदार्थ और नए डिजाइन से बना है। यह रोबोट आपदा प्रभावित इलाकों में खोज और बचाव में उपयोगी हो सकता है।

प्रो. जोशी ने बताया कि जटिल वैज्ञानिक बातें भी रोचक और समझने योग्य ढंग से कही जा सकती हैं। शोध का सार ऐसा होना चाहिए, जो विषय की नवीनता, उपयोगिता और महत्व को उजागर करे।

कार्यक्रम की शुरुआत कुलपति प्रो. आनंद भालेराव के अध्यक्षीय संबोधन से हुई। उन्होंने कहा कि संचार पेशेवर सफलता की कुंजी है। उन्होंने बताया कि शरीर की भाषा, चेहरे के भाव और हाथों के इशारे संवाद को मजबूत बनाते हैं। इनका सही उपयोग साक्षात्कार जैसी स्थितियों में आत्मविश्वास बढ़ाता है। प्रो. भालेराव ने कहा कि यह व्याख्यान शृंखला विश्वविद्यालय की अकादमिक उत्कृष्टता और बौद्धिक विकास की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि प्रो. सुहास जोशी जैसे विद्वानों को बुलाकर हम विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को लाभ पहुंचा रहे हैं। सत्र के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने चर्चा की कि प्रो. जोशी की रणनीतियों को अपने जीवन में कैसे अपनाएं। यह आयोजन सफल रहा। सभी को प्रभावी संचार की रणनीतियों की गहरी समझ मिली। अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सी.सी. मंडल ने दिया।